सारांश एवं निष्कर्ष

प्रस्तावना :

प्रस्तुत शोध में “जिला शिक्षण और प्रशिक्षण संस्था (DIET) वर्धा द्वारा गुणवत्ता विकास कार्यक्रम हेतु कार्यरत दत्तक पाठशालाओं का मूल्यांकन” अध्ययन किया गया है। जिसके अंतर्गत चयनित स्कूलों के उत्तरदाताओं की शैक्षणिक, सामाजिक, गुणवत्ता, कार्यक्रम से दत्तक स्कूलों के बदलाव , तथा कार्यक्रम से शिक्षक, स्कूल, विद्यार्थी, गांव आदि बदलाव इन तमाम महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में गुणवत्ता विकास को जानकर स्पष्ट किया गया हैं। अध्ययन शोध क्षेत्र के दौरान प्राप्त की गई जानकारी प्राथमिक तथ्यों पर आधारित है, जिनमें वर्धा जिला के दत्तक स्कूल के शिक्षक तथा स्कूल व्यवस्थापन समिति के सदस्य/ अभिभावक के जानकारियों को महत्त्व दिया गया हैं। जिसके माध्यम से शोध अध्ययन के सभी मूलभूत पहलुओं को सरलता से समझा जा सके। साथ ही शोध अध्ययन की समग्र बिंदु अर्थात निष्कर्ष को शामिल भी किया गया है। जो अध्ययन के पश्चात् शोधार्थी द्वारा दिए गए विषय संबंधी महत्वपूर्ण तथ्य है, जिससे शोध की विश्वनीयता व उसकी उपयोगिता को रेखांकित किया जा सके।

5.1 शोध पद्धति का सारांश :

अध्ययन का शीर्षक **“जिला शिक्षण और प्रशिक्षण संस्था (DIET) वर्धा द्वारा गुणवत्ता विकास कार्यक्रम हेतु कार्यरत दत्तक पाठशालाओं का मूल्यांकन ”** यह है। महाराष्ट्र राज्य में वर्धा जिला के अंतर्गत जिस गावं में दत्तक स्कूल कार्यरत है ऐसे 30 स्कूल प्रस्तुत अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र है। प्रस्तुत शोध में प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक तथा स्कूल व्यवस्थापन समिति के सदस्य/अभिभावक से गुणवत्ता विकास कार्यक्रम से बदलाव का विस्तृत वर्णन किया गया हैं, इसलिए यह शोध मुख्यतः वर्णात्मक अभिकल्प में आता हैं। प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण पद्धति पर निर्भर हैं, प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक की गुणवत्ता को जानने के लिए प्रश्नावली अनुसूची का उपयोग किया गया हैं, तथा अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए अभिभावक से प्रत्यक्ष संरचित साक्षात्कार अनुसूची द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है। जिसके सभी प्राप्त आकड़े संख्यात्मक रूप में हैं। प्रस्तुत शोध में संख्यात्मक पहुलओं को रखा गया है इसलिए यह शोध मुख्य रूप से मात्रात्मक आता हैं। तथा शोध में खुले प्रश्न के माध्यम से अधिक जानकारी प्राप्त की गयी, इसलिए

यह शोध गुणात्मक रूप में है। अध्ययन के दौरान प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। इसलिए शोध जनगणना पद्धति से किया गया हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक स्रोत द्वारा तथ्यों का संकलन करने के लिए संरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।द्वितीय स्रोत के लिए लाइब्रेरी मेथड्स का प्रयोग किया गया है। तथ्यों का विश्लेषण करने हेतु तथ्यों के स्वरूप सम्बंधित संगणक अनुप्रयोगों का उपयोग किया गया है ।आंकड़ों को विश्लेषण करने के लिए SPSS टूल का प्रयोग किया गया है।

5.2 सारांश:

तृतीय अध्याय :

प्रस्तुत अध्ययन में गुणवत्ता विकास कार्यक्रम में शिक्षक की भूमिका का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष:

- प्रशिक्षण लिए हुए ज्यादातर शिक्षक वयस्क या अधिकतम 40 से 50 उम्र के है।
- प्राथमिक दत्तक स्कूल में महिला शिक्षक का अनुपात दो तिहाई (2/3) है।
- अधिकांश 60 प्रतिशत शिक्षक स्नातक शिक्षा स्तर प्राप्त है। तथा आधे से कम शिक्षक स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा स्तर प्राप्त किये है।
- अधिकांश 2/3 शिक्षक डी.एड स्तर का तांत्रिक एव व्यावसायिक शिक्षण प्राप्त है, जो शिक्षक के लिए अनिवार्य है। इसके अलावा 38 प्रतिशत शिक्षक जिन्होंने उच्चतम शिक्षा की स्नातक तथा स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त है।
- अध्यापन का अनुभव 20-25 वर्ष 1/3 उत्तरदाता का है। दत्तक स्कूल के शिक्षक कम से कम 10 वर्ष का अनुभव प्राप्त है।
- दत्तक स्कूल की गतिविधियों में 90 प्रतिशत ग्रामीण स्कूलों ने ज्यादा सहभागिता दर्शायी है।
- ¾ शिक्षक का शिक्षा प्रति निष्ठा तथा व्यवस्था में बदलाव के लिए सहमत है।
- 4/5 से अधिक दत्तक स्कूल की गतिविधियों से शिक्षा में प्रगति होती है इससे सहमत है।
- उत्तरदाताओं में सामाजिक क्षमता विकसित है।

- 4/5 कार्यकुशलता, 2/3 नाविन्यता है।
- शिक्षकों की गुणवत्ता आधे से अधिक सामान्य स्तर पर है।
- उपक्रम से दत्तक स्कूलों 100 प्रतिशत में बदलाव आया है।
- गतिविधियों में सीखना-सिखाने की प्रक्रिया चलती है।
- स्कूल शिक्षा के जरिये गांव के विकास में योगदान देते है।
- कृतीशील उपक्रमों से गांव प्रति आत्मीयता बढ़ गयी है।
- गाँधी विचारों की सार्थकता तथा नई तालीम शिक्षा से बदलाव की प्रक्रिया सहज और प्राकृतिक रूप से उजागर होती है।
- पढना, लिखना, काम करना इस प्रकार अधिक कार्य से स्कूल में बदलाव आया है।
- गांव के विकास में स्कूल की महत्वपूर्ण भूमिका है।

चतुर्थ अध्याय :

प्रस्तुत अध्ययन में स्कूल व्यवस्थापन समिति की दृष्टि में स्कूल का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित तथ्य पाए गये है:-

- स्कूल व्यवस्थापन समिति के सदस्य/अभिभावक की उम्र औसतन 36 है।
- पुरुषों की तुलना में महिला कम है।
- ½ से अधिक उत्तरदाता माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त है।
- 1/3 उत्तरदाता खेती और खेती मजदूरी करते है।
- उत्तरदाता स्कूल प्रति अधिक जागरूक है।
- स्कूल की संरचनात्मक व्यवस्था सक्षम है।
- अधिकतर शिक्षक अपना कर्तव्य निभाते है।
- गुणवत्ता, सहयोग, व्यक्तित्व, और विकास ¾ से अधिक है।
- अधिकतर विद्यार्थियों का गुणवत्ता विकास बढ़ रहा है।

- ❖ शिक्षक की सोच समाज प्रति अपनापन दर्शाती है।
- ❖ स्कूल की वजह से गांव में सुधार हो रहा है।

5.3 परिकल्पनाओ का परीक्षण :

- ❖ **गुणवत्ता विकास कार्यक्रम से शैक्षिक एवं सामाजिक क्षमताओं का विकास होता है।**

गुणवत्ता विकास करने हेतु शिक्षक और विद्यार्थी के लिए विविध उपक्रम, कार्यशाला और प्रशिक्षण की क्षमता विकास की दृष्टि से कार्य रचना करना है। दत्तक स्कूलों में जो कार्यक्रम विगत तीन वर्षो में आयोजित किये, जिसका प्रभाव और परिणाम शैक्षिक और सामाजिक क्षमताओ पर हुआ। साक्षात्कार सूचि और प्रश्नावली से प्राप्त तथ्यों को विश्लेषित करने के बाद सारणी क्र. 3.6 निर्देशित होता है, कि 4/5 से अधिक दत्तक स्कूल की गतिविधियों से शिक्षा में प्रगति होती है। औसतन 7.0500 ± 2.61952 अंक प्राप्त हुए हैं जो कि यह दर्शाता है कि औसतन सामाजिक क्षमता मजबूत स्तर पर है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर शिक्षकों में सामाजिक क्षमता विकसित होती है यह सिद्ध होता है।

- ❖ **प्रशिक्षण प्राप्त रणनीतियों से कृतिशिलता द्वारा गुणवत्ता विकास होता है।**

प्रशिक्षण के द्वारा विशेष कौशल और क्षमताओं का विकास किया जाता है जिससे नियोजन से अमल तक के सभी विधिय सम्मिलित की जाती है। उद्धेश्यो के प्राप्त हेतु रणनीतियों की समझ कार्यशाला या प्रशिक्षण के द्वारा तकनिकी तौर पर प्राप्त होती है। इसी तरह के प्रयास से विकास की प्रक्रिया गतिशील होती है। इस उपक्रम में भी इस तरह की रणनीतियाँ अपनायी गयी जिससे गुणवत्ता में बदलाव आया है। निम्न सारणी क्र. 3.8 और चार्ट सं. 3.4 और 3.5 से प्राप्त निष्कर्ष द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त रणनीतियों से कृतिशिलता द्वारा गुणवत्ता विकास होता है, यह सिद्ध होता है।

- ❖ **स्कूल और समाज से सम्बन्ध प्रस्थापित होने से सामाजिकता विकसित होती है।**

इस उपक्रम में स्कूल और जन को जोड़ने की प्रक्रिया सैधांतिक तौर पर अभिन्न अंग के रूप में मानी गयी। बिना सामाजिकता के शिक्षा नहीं हो सकती। इस तत्व के आधार पर स्कूल और समाज का सम्बन्ध माना

गया। इसीलिए इन रिश्तो की साथ जो कार्यक्रम आयोजित किये गये जिससे सामाजिकता में सकारात्मक बदलाव निर्देशित हुए है। सारणी क्र.3.7 और चार्ट 3.3 से प्राप्त निष्कर्ष द्वारा स्कूल और समाज से सम्बन्ध प्रस्थापित होने से सामाजिकता विकसित होती है।

- **गुणवत्तापूर्ण सार्थक शिक्षण अभियान से दत्तक पाठशालाओं में बदलाव आया है।**

गुणवत्तापूर्ण सार्थक शिक्षण अभियान की नींव नई तालीम के शिक्षा दर्शन पर आधारित रही है। समग्र जीवन के लिए शिक्षा के तत्वों को औपचारिक शिक्षा के जरिये क्रियान्वित किया गया। जिससे स्कूली ढांचे में तथा अध्ययन अध्यापन पद्धति में बदलाव निर्देशित हुए। चार्ट क्र. 3.6 आशय विश्लेषण के द्वारा गुणवत्तापूर्ण सार्थक शिक्षण अभियान से दत्तक पाठशालाओं में बदलाव आया है, यह सिद्ध होता है।

5.4 मूलभूत शोध प्रश्न के जवाब :

- **क्या गुणवत्ता विकास कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षको की क्षमताओं का विकास हुआ है?**

प्रस्तुत लघु शोध में प्राप्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि गुणवत्ता विकास कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की क्षमताओं का विकास हुआ है। शिक्षक की दूरदृष्टि बढ़ गयी। बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षमताओं का अधिक विकास हुआ। गांव के लोगो में स्कूल प्रति अधिक लगांव बढ़ा, क्योकि यह शिक्षक की तत्परता और कार्यकुशलता पर निर्भर करता है।

- **क्या प्रशिक्षण व्दारा प्राप्त रणनीतियों का शिक्षकों ने क्रियान्वयन किया है?**

प्रस्तुत लघु शोध में प्राप्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षण द्वारा प्राप्त रणनीतियों का शिक्षकों ने क्रियान्वयन किया है। शिक्षा में विज्ञान, भूगोल आदि विषयों को प्रात्यक्षिक तरह से सिखाया जाता है। खेल-कूद तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम में रूचि और इसका अमल किया जाता है। जिससे विद्यार्थी में सकारात्मक बदलाव आ रहे है।

- **जि. शि. प्र. संस्था, दत्तक पाठ्शाला एव नई तालीम, इस संयुक्त कार्यप्रणाली की पध्दति एव तंत्र क्या है?**

  जिला शिक्षण और प्रशिक्षण संस्था वर्धा तथा नई तालीम समिति के साथ संयुक्त रूप में कार्य किया जा रहा है। DIET, नई तालीम समिति के अंतर्गत 50 स्कूलों में प्रयास किया गया, उनमे से वर्धा जिला में सिर्फ 30 दत्तक स्कूल के रूप में कार्यरत है। जिसका समीक्षण और मार्गदर्शन जिला शिक्षण और प्रशिक्षण संस्था करते है और शिक्षण के सभी समावेश (Input) नई तालीम की ओर से गुणवत्तापूर्ण सार्थक शिक्षण की ओर दिए गये। गुणवत्तापूर्ण सार्थक शिक्षण अभियान की शुरुवात अक्टूम्बर 2014 को, वर्धा निजी एव सरकारी स्कूलों के साथ हुई। किसी उत्पादन या सेवा के लिए उपयोग में लाया हुआ **ज्ञान** + **कौशल** +**मूल्य** याने गुणवत्ता है।अच्छा व्यवस्थापन की शिक्षा मतलब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा है। शालेय सुविधा, शिक्षक, मुख्याध्यापक, अध्यापन पद्धति, अध्ययन साहित्य, मूल्यांकन और तंत्रज्ञान, परिसर की आर्थिक बाजु, सामाजिक एव राजकीय प्रणाली ये गुणवत्ता के नवरत्न प्रतिनिधिक है।

- **क्या प्रशिक्षण लेने के बाद शिक्षकों में बदलाव आया है?**

  प्रस्तुत लघु शोध में प्राप्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि गुणवत्ता विकास कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की क्षमताओं का विकास हुआ है। अधिकतर शिक्षक अपना कर्तव्य मानते है, तथा कर्तव्य प्रति निष्ठावान है। प्रशिक्षण से शिक्षकों में समझ बढ़ गयी है तथा उनमें गुणवत्ता, सहयोग, व्यक्तित्व और विकास में सकरात्मकता आई है। शिक्षक की सोच समाज प्रति अपनापन दर्शाती है। स्कूल की वजह से गांव में सुधार आ रहा है और गांव में स्कूल का प्रभाव दिखता है। दत्तक स्कूल के 30 बच्चो ने अनेक अलग अलग कार्य में सहभागिता ली थी जिसमे उनका दिल्ली भ्रमण के लिए चयन हुआ। वर्धा जिला के जिलाधीश ने दत्तक स्कूल के बच्चे तथा शिक्षक की खास प्रशंसा की गयी।

5.5 निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध “जिला शिक्षण और प्रशिक्षण संस्था (DIET) वर्धा द्वारा गुणवत्ता विकास कार्यक्रम हेतु कार्यरत दत्तक पाठशालाओं का मूल्यांकन” यह है। प्रशिक्षण लिए हुए ज्यादातर शिक्षक वयस्क या अधिकतम 40 से 50 उम्र के है। इससे यह कहा जा सकता है की अधिकतम शिक्षक अनुभवी है। प्राथमिक दत्तक स्कूल में महिला शिक्षक पुरुष शिक्षक से अधिक है। मातृत्व एक परिसंवाद से महिला शिक्षक में मातृत्व होता है। अधिकांश शिक्षक स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त है। इससे शिक्षक में शिक्षा प्रति लगांव है। तथा आधे से कम शिक्षक स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा स्तर प्राप्त किये है। शिक्षक सेवांतर्गत शिक्षा अभी भी प्राप्त करते है। एक शिक्षक के लिए डी.एड स्तर का तांत्रिक एव व्यावसायिक शिक्षण अनिवार्य है। तथा उससे भी उच्च शिक्षा के लिए इसके अलावा शिक्षक है जिन्होंने उच्चतम शिक्षा की बी.एड. और एम.एड की उपाधि प्राप्त है। दत्तक स्कूल के शिक्षक में 10 से 30 वर्ष का अध्यापन अनुभव प्राप्त है। इससे शिक्षक में अधिक निपुणता है, जो अनुभव से आयी है। दत्तक स्कूल की गतिविधियों में 90 प्रतिशत ग्रामीण स्कूलों ने सहभागिता दर्शायी है, इससे यह भी कहा जा सकता है कि ग्रामीण स्तर पर यह कार्यक्रम का प्रभाव सकारात्मक है।

शिक्षक के इस प्रशिक्षण से अंतर्गत तथा बहिर्गत बदलाव हुए है। शिक्षा में गतिविधियों के वजह से प्रगति होती है। दत्तक स्कूल में नाट्य, प्रात्यक्षिक, खेल-कूद इन सभी को अंतर्भूत करके शिक्षा को नया रूप मिला है। दत्तक स्कूल के शिक्षक में अधिक सामाजिक क्षमता विकसित हुयी है। समाज में बदलाव लेन के लिए स्कूल अपनी भूमिका निभाता है। शिक्षक में कार्यकुशलता तथा नाविनता आयी है, जिससे शिक्षा मनोरंजकता से अध्यापित कर सकते है। शिक्षकों में गुणवत्ता आयी है, इसकारण वह अपने बच्चो को गुणवत्ता दे सकते। शिक्षा से बौद्धिक, सामाजिक, भवनात्मक, सांस्कृतिक विकास हो रहा है। सभी तथ्यों को एकत्रित करने के बाद उपक्रम में बदलाव दीखता है। शिक्षकों का मानना है कि उपक्रम से दत्तक स्कूलों में बदलाव आया है। दत्तक स्कूलों की गतिविधियों में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया चलती है। स्कूल शिक्षा के जरिये शिक्षक अपने गांव के विकास में योगदान देते है। कृतिशील उपक्रमों से शिक्षकों में गांव प्रति आत्मीयता बढ़ गयी है।

गाँधी विचारों की सार्थकता तथा नई तालीम शिक्षा से बदलाव की प्रक्रिया सहज और प्राकृतिक रूप से उजागर होती है। पढ़ना, लिखना, काम करना इस प्रकार अधिक कार्य से स्कूल में बदलाव आया है। गांव के विकास में स्कूल की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक, विद्यार्थी तथा स्कूल के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु स्कूल

व्यवस्थापन समिति के सदस्य/अभिभावक का साक्षात्कार लिया गया, अभिभावक की उम्र औसतन 36 के पास है। इस स्कूल व्यवस्थापन समिति में महिला कम है और पुरुष ज्यादा है। इससे यह कहा जा सकता है कि महिलाओं की मात्रा कम है। अभिभावक ज्यादातर माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त है। और खेती और खेती मजदूरी करते है।

गांव के लोग तथा अभिभावक स्कूल प्रति अधिक जागरूक है। स्कूल की संरचनात्मक व्यवस्था सक्षम है। इस व्यवस्था में भी शिक्षको ने स्कूल को आकर्षित बनाया है, जिसमे गांव के लोगो ने सहभागिता दिखाई है। अभिभावक को अपने शिक्षक के प्रति अपनापन है। अधिकतर शिक्षक अपना कर्तव्य निभाते है। गुणवत्ता, सहयोग, व्यक्तित्व, में बदलाव आया है। अधिकतर विद्यार्थियों का गुणवत्ता विकास बढ़ रहा है। शिक्षक की सोच समाज प्रति अपनापन दर्शाती है। स्कूल की वजह से गांव में सुधार हो रहा है।

5.6 संभावित समाज कार्य हस्तक्षेप

प्रस्तुत लघु शोध के माध्यम से गुणवत्ता विकास कार्यक्रम के जरिये अन्य शिक्षक, विद्यार्थी, स्कूलों, गांवों, को जागरूक करने हेतु निम्न समाजकार्य हस्तक्षेप निम्न रूप से किये जा सकते है।

शिक्षक के लिए

- शिक्षक ने दत्तक स्कूल के प्रशिक्षण से बदलाव लाने के लिए अभियान का क्रियान्वयन करना।
- प्रशिक्षण में पाए ज्ञान को अन्य शिक्षक को देना चाहिए।
- शिक्षको ने शिक्षा को समाजकार्य दृष्टि से देखना चाहिए।

स्कूल के कार्यक्रमों में समाज की सहभागिता

- स्कूल के कार्यक्रम में समाज की सहभागिता होनी चाहिए।
- स्कूल में समाज की सहभागिता हो तो छात्र मनोरंजन से सीखेंगे।
- स्कूल के कार्यक्रम में समाज की सहभागिता महत्वपूर्ण है।

स्कूल व्यवस्थापन समिति की सक्रियता

- स्कूल व्यवस्थापन समिति को सक्रिय होना चाहिए।
- स्कूल व्यवस्थापन समिति को गुणवत्ता विकास के बारे में जागरूक होना चाहिए।
- स्कूल व्यवस्थापन समिति/अभिभावक को सभाओं में उपस्थित होना चाहिए।

स्थानीय कारीगरी तथा हस्त व्यवसाय के लोगों का अध्यापन में सहभाग

- शिक्षक ने विषय संबंधित कार्यशालाओं का आयोजन करना चाहिए।
- स्थानीय कारागिरी तथा हस्त व्यवसाय की लोगों की अध्यापन में सहभागिता दर्शानी चाहिए।